खामोश बहनें

आप क्या करेंगें यदि आपका जीवन भर का घर नरक में बदल जाए?

नूर और अमृत दोनों स्वयं को ऐसे समय में एक साथ पाती हैं, जब 1947 में भारत एवं पाकिस्तान में खूनी बँटवारा हो रहा था और इससे पूरी दुनिया प्रभावित थी। एक महिला मुस्लिम व दूसरी सिख हिन्दू थी। उन्हें बलात् दर्दनाक निर्णय लेने के लिए बाध्य किए गए एवं वे इस लिए चुप रहने के लिए तैयार हैं कि उन्हें दबाया जाएगा। उनकी मुक्ति केवल मृत्यु में दिखाई पड़ती है। लेकिन मृत्यु भी उनका साथ देती दिखाई नहीं पड़ती।

कविता, गीत, संगीत एवं आंदोलन के साथ **'खामोश बहनें'** शोध एवं विकास के अंश के रूप में 2017 में भारत और पाकिस्तान की स्वतंत्रता एवं विभाजन के 70 वर्षों की स्मृतियों को उत्सव के रूप में याद दिलाती है। दस लाख से ज्यादा लोगों ने निजी धार्मिकता के साथ अपनी सुरक्षा की आशा में सीमा को पार किया। हज़ारों के साथ ज्यादतियाँ हुई, अपहरण किए गए, बलात् धर्म-परिवर्तन करवाया गया और मारे गए। साक्षात्कार एवं कार्यशालाओं पर आधारित 'खामोश बहनें' एक ऐसी काल्पनिक कहानी है, जो उन लोगों को समर्पित है, जो उस विभाजन से प्रभावित हुए और विश्व भर में आज भी विस्थापन और हिंसा से संघर्ष कर रहे हैं।

उम्र 8 वर्ष से ऊपर

लगभग 60 मिनट एवं दर्शकों के साथ विमर्श